B.A. PART - 1
हिन्दी (प्रतिष्ठा) प्रथम-पत्र
हिन्दी साहित्य का इतिहास

प्रश्न :- नाथ- साहित्य क्या है ?

उत्तर :- सिद्धों की वाममार्गी भोग प्रधान योग- साधना की प्रतिक्रिया के रूप में आदिकाल में नाथपंथियों की हठयोग- साधना आरम्भ हुई। राहुल जी ने नाथ-पंथ को सिद्धों की परम्परा का ही विकसित रूप माना है। इस पंथ के चलानेवाले मत्स्येन्द्रनाथ (मछन्दरनाथ) तथा गोरखनाथ माने गये हैं। डॉ० रामकुमार वर्मा ने नाथ- पंथ के चरमोत्कर्ष का समय बारहवीं शताब्दी से चौदहवीं शताब्दी के अन्त तक माना है। उनका मत है कि नाथ-पंथ से ही भक्तिकाल के संत-मत का विकास हुआ था, जिसके प्रथम कवि कबीर थे। इस मन्तव्य का समर्थन कथ्य और शिल्प दोनों दृष्टियों से हो जाता है- नाथपन्थी रचनाओं की अनेक विशेषताएँ सन्त-काव्य में यथावत् विद्यमान हैं।

डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार- "नाथ-पन्थ या नाथ- सम्प्रदाय के सिद्ध-मत, सिद्ध-मार्ग, योग-मार्ग, योग- सम्प्रदाय, अवधूत-मत एवं अवधूत सम्प्रदाय नाम भी प्रसिद्ध है।" उनके इस कथन का यह अर्थ नहीं कि सिद्ध-मत और नाथ-मत एक ही हैं। उन्होंने तो नाम ख्याति की ओर ध्यान आकर्षित किया है, जिसका आशय इतना ही है कि इन दोनों मार्गों को एक ही नाम से पुकारा जाता था और उसका कारण यह था कि मत्स्येन्द्रनाथ (मछन्दरनाथ) तथा गोरक्षनाथ (गोरखनाथ) सिद्धों में भी गिने जाते थे। यह प्रसिद्ध है कि मत्स्येन्द्रनाथ नारी- साहचर्य के आचार में जा फँसे थे; जिससे उनके शिष्य गोरक्षनाथ ने उद्धार किया था। वस्तुतः इस लोक चर्चा के मूल में ही सिद्ध-मत एवं नाथ मत का अन्तर छिपा हुआ है। सिद्ध-गण नारी-भोग में विश्वास करते थे किन्तु नाथपन्थी इसके विरोधी थे।

अभ्यासार्थ प्रश्न

प्रश्न :- नाथ-साहित्य पर एक संक्षिप्त नोट लिखें ?

प्रस्तुत :
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग - हिन्दी (S.R.A.P.C) (B.R.A.B.U.M)
मो० न० - 7909046087
दिनांक - 19.08.2022